



उपस्थित वोल्वाटाक्सिन कैंसर कोशिकाओं की श्वसन प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न करता है। इसका हृदय, रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल की अधकता एवं कैंसर संबंधी रोगों में उत्तम पया गया है।

वुडइयर मशरूम के औषधीय महत्वः इस मशरूम में बवासीर, पेट की व्याधियों, गले का फोड़ा एवं रक्ताल्पता रोधी गुण पाया जाता है। यह रक्त के कोलेस्ट्रॉल को कम करता है एवं इसका नित्य उपयोग ही दक्षिण–पूर्वी एशियाई में एथेरोस्क्लेरोसिस रोग के नगण्य होने का प्रमुख कारण है।

गायनोडर्मा मशरूम के औषधीय महत्वः इस मशरूम में पालीसैक्राइडस एवं ट्राइटरपीनायडस दो प्रमुख रासायनिक तत्व होते हैं जो रक्तचाप, रक्त शर्करा, टयूमर, कैंसर सहित अन्य रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं। इससे तैयार दवा का उपयोग मानसिक तनाव कम करने, मोटापा कम करने, हिपैटाइटिस, ब्रान्काइटिस, बवासीर, मधुमेह, कैंसर एवं एड्स के उपचार में किया जाता है।

मैटाके मशरूम(ग्राइफोला फन्डोसा) के औषधीय महत्वः मैटाके मशरूम (ग्राइफोला फन्डोसा) मशरूम की खेती जापान में व्यावहारिक स्तर पर हो रही है। इस मशरूम से ग्रीफोन नामक दवा बनाई जाती है। इसमें प्रचुर मात्रा में उपस्थित बीटा–1, 6–डी. ग्लूकॉन शरीर की कैंसर एवं अन्य रोगरोधी क्षमता को बढ़ाता है।

कीड़ा जड़ी या कोर्डिसेप्स के औषधीय महत्वः कीड़ा घास(कोर्डिसेप्स साइनेन्सिस) मशरूम हिमालय की पहाड़ियों पर गर्मी के मौसम में एक कीट हेपिएलस आरमोरिकेन्स के लार्वा पर अत्यंत कम समय के लिये पाया जाता है।

कीटनाशक दवा बनाने की विधि:

- एक एकड़ फसल को उपचारित करने के लिए लगभग 10 किलोग्राम ताजी कुटी हुई निबोली (नीम का फल बीज) को कपड़ों में बांधकर 200 लीटर पानी में रात भर के लिए भिंगोते हैं, करीब 12 घंटे भिंगोने के बाद फूली निबोली को रगड़कर मसलकर इसे छानकर अलग करने के बाद इसमें 400 मिली लीटर, सैण्डोक्टि नामक तरल साबुन मिला देते हैं जिसे घोल अच्छा तैयार हो जाये। अब इस घोल को आवश्यकतानुसार फसलों पर सात दिनों के अंतराल पर करीब दो–तीन बार स्प्रे करें।
- नीम के तेल से 2 प्रतिशत का घोल बनाने हेतु घानी द्वारा निकाला अर्थात् तेल निकालने वाली मशीन द्वारा चार लीटर ताजा तेल को 150–200 लीटर पानी का घोल तैयार के बाद 400 मिली लीटर तरल साबुन या सर्फ मिलाकर घोल तैयार कर लें। इसे आवश्यकतानुसार फसल पर हानिकारक कीड़ों का प्रजातियां प्रभावित पाई गई हैं जिसमें मुख्य रूप से टिड्डे, चने की सूडी, तम्बाकू की सूंडी, तेला, धान के पतंगे, तना छेदक, पुलमक्खी, मच्छर, चनापुल बेधक इत्यादि।

नीम की पत्तियों से कीटनाशी बनाना:

- नीम की पत्तियों से एक बाल्टी को भरा जाता है। बाल्टी को पानी से भरकर चार दिनों के लिए छोड़ दिया जाता है। पांचवे दिन पत्तियों को अच्छी तरह से मिलाकर छान लिया जाता है। उसके बाद, छिड़काव करने से पिल्लू, भृंग, फनगा, दीमक को नियंत्रित किया जा सकता है।

जिला स्तरीय कृषि एवं कृषि संबंधित पदाधिकारियों का सम्पर्क नं.–

1. **श्री राजीव कुमार,** जिला कृषि पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक आत्मा, नालंदा, मोबाइल नं. 9431818731
2. **श्री राकेश कुमार,** सहायक निदेशक, उद्यान, नालंदा मोबाइल नं. 9431881937
3. **श्री रमेश कुमार,** जिला पशुपालन पदाधिकारी, नालंदा, मोबाइल नं. 9934696480
4. **श्री शम्भु कुमार,** जिला मत्स्य पदाधिकारी, नालंदा मोबाइल नं. 9304397279
5. **श्री संतोष कुमार,** सहायक निदेशक पौधा संरक्षण, नालंदा मोबाइल नं.7004507544
6. **श्री अभिमन्यु कुमार,** सहायक निदेशक, कृषि अभियंत्रण, नालंदा मोबाइल नं. 9470838573
7. **श्री अजीत कुमार,** सहायक निदेशक, भूमि एवं जल संरक्षण, नालंदा मोबाइल नं.7366899548
8. **श्री अविनाँ कुमार,** उपपरियोजना निदेशक, आत्मा, नालंदा, मोबाइल नं.7800001448
9. **श्री जितेन्द्र कुमार,** जिला गव्य विकास पदाधिकारी, नालंदा मोबाइल नं. 9471007416
10. **श्री अमृत कुमार बरनवाल,** जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड, नालंदा मोबाइल नं.9936270153
11. **श्रीकांत सिंह,** अग्रणी बैंक प्रबंधक, नालंदा मोबाइल नं. 9470099167
12. **श्री संजय पासवान,** जिला परियोजना प्रबंधक, जीविका, नालंदा मोबाइल नं. 9771478619
13. **श्री जितेन्द्र कुमार,** जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, एमडीएम, नालंदा मोबाइल नं. 9661161975
14. **श्रीमति रीना कुमारी,** जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, समेकित बाल विकास सेवाएं, नालंदा, मोबाइल नं. 94310050201

कृषि से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए विश्वविद्यालय का टॉल फ्री नं॰ 1800 345 6455 (पूर्वाहन 5:00 बजे से अपराह्न 7:00 बजे तक एवं फार्मर्स हेल्पलाईन : farmershelplinebausabour@gmail.com
किसान हेल्पलाईन नं॰ 18003456455 www.youtube.com/bausabour

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत, (नालंदा)
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर
Mob.: 9934488102, nalandakvk2017@gmail.com

द्वारा प्रकाशित तथा दीक्षाआर्ट एण्ड प्रिन्टस, पटना # 9431436534 द्वारा मुद्रित

कृषक समाचार

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत, (नालंदा)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

nalandakvk2017@gmail.com

वर्ष 2025 | अंक – 04 | जनवरी से मार्च, 2025

संरक्षक
डा0 दुनिया राम सिंह
कुलपति,
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

मार्गदर्शन
डा. अंजनी कुमार
निदेशक, अटारी, पटना जोन IV, आई.सी.ए.आर., पटना
डा. आर. के. सोहाने,
निदेशक, प्रसार शिक्षा
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर
डा. आर. एन. सिंह
सह निदेशक प्रसार शिक्षा
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

मुख्य संपादक एवं प्रकाशक
डा. सीमा कुमारी
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, हरनौत, (नालंदा), मो॰– 9934488102

संपादक मंडलः
डा. ज्योति सिन्हा
विषय वस्तु विशेषज्ञ, गृह विज्ञान, मो. 9430052150
डा. विद्याशंकर सिन्हा
विषय वस्तु विशेषज्ञ, पशुचिकित्सा विज्ञान
94306667308
डा0 उमेश नारायण उमेश
विषय वस्तु विशेषज्ञ, मृदा विज्ञान, मो. 9430034494
श्रीमति कुमारी विभा रानी
विषय वस्तु विशेषज्ञ, उद्यान, मो. 9122699448
डा0 आरती कुमारी
विषय वस्तु विशेषज्ञ, पादप रोग विज्ञान
8638249177
श्री दीपक कुमार कंचन
प्रक्षेत्र प्रबंधक, मो. 9709058999
कुमारी पुनम पल्लवी
तकनीकी सहायक
8797299448

संदेश

माननीय मुख्यमंत्री जी के कुशल नेतृत्व मे बिहार की बदलती कृषि सकारात्मक करवट ले रही है तथा राज्य सरकार कृषि को व्यवसाय का रूप देने के लिए कृत संकल्पित है। इस पूनीत उद्देश्य की पूर्ति एवं उसे सकारात्मकता प्रदान करने हेतु कृषि विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील है। आज आवश्यकता है वैज्ञानिकों द्वारा विकसित तकनीकों को किसानों तक पहुँचाने की। इस दिशा में कृषि विज्ञान केंद्र, अनुसंधान एवं किसानों के बीच एक सशक्त कड़ी का काम कर रही है। कृषि विज्ञान केंद्र, नालंदा द्वारा प्रकाशित माह जनवरी से मार्च 2025 का कृषक समाचार का यह संस्करण आज किसान भाइयों के मार्गदर्शन हेतु काफी सहायक होगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि इसके माध्यम से आप रबी मौसम के विभिन्न फसलों, उद्यानिक एवं अन्य कृषि संबंधित गतिविधियो द्वारा उत्पादन बढ़ाने में सफल होगें। आपकी सहभागिता एवं सहयोग से बिहार में फसलों की उत्पादकता बढ़ाई जा सकेंगी एवं कृषि एक व्यवसाय का दर्जा ले सकेंगी।



डा0 दुनिया राम सिंह
कुलपति,
बि.कृ.वि.,सबौर, भागलपुर

प्रकाशक की कलम से

आदरणीय कृषक बंधुओं,

इस कृषक संदेश के माध्यम से मै सभी पाठकों को कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत (नालंदा) की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित करती हूँ। हमारा राज्य और देश एक कृषि प्रधान राज्य है, अतः इस क्षेत्र में निरन्तर विकास हमारे राज्य और देश की अर्थव्यवस्था, नागरिकों के पोषण तथा आर्थिक स्थिती में सुधार तथा स्वरोजगार सृजन करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है। केन्द्र के द्वारा जिले की स्थानीय मिट्टी, पानी, जलवायु एवं क्षेत्र की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गांवों में जलवायु अनुकूल कृषि, पोषण जागरूकता, मोटे अनाजों का प्रत्यक्षण एवं प्रसंस्करण का कार्यक्रम चलाए जा रहे है। अतः इस संदर्भ में कृषक संदेश का यह अंक पाठकों के तकनीकी ज्ञान एवं जागरूकता की निरन्तर बढ़ोतरी के लक्ष्य प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होगा।



डा0 सीमा कुमारी
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान







जनवरी माह के प्रमुख कृषि कार्य

1. जानवरों को ठंड, ओस एवं कोहरे से बचायें। पशुओं को बोरी की झूल बनाकर ओढ़ायें।
2. समय से (15–30 नवंबर) के बीच बोये गये गेहूँ में आवश्यकता अनुसार दुसरी या तीसरी सिंचाई करनी चाहिए। तीसरी सिंचाई के उपरांत नेत्रजन खाद का यूरिया के रूप में उपरिवेशन करना चाहिए। दिसंबर में बोये गये जौ एवं गेहूँ की फसल में पहली सिंचाई के चार–पाँच दिन बाद (बुआई के 25–30 दिनों पर) उपर्युक्त खरपतवारनाशी दवा का छिड़काव करना चाहिए।
3. रबी मक्का की फसल में निकाई गुड़ाई करें एवं यूरिया का प्रथम उपरिवेशन का मिटटी चढ़ा दें तथा आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
4. अरहर, चना एवं मसुर की फसल में दाना बनते समय फलीयछेदक की रोकथाम के लिए प्रोफेनोफॉस नामक कीटनाशी दवा के 0.1–0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या एन0पी0वी0 250 एल.ई. प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करना चाहिए।
5. सरसों एवं राई में लाही कीड़े की रोकथाम के लिए ईमीडाक्लोरोप्रीड की 0.25 मि.ली. या डायमेथोएट 30 प्रतिशत की 1.0 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करनी चाहिए।
6. आलू को आवश्यकतानुसार 10–15 दिनों पर सिंचाई करनी चाहिए।अगात तथा पिछात झुलसा रोग से बचाव के लिए डायथेन एम–45 या रिडोमील एम. जेड 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव करना चाहिए। अगात आलू की खुदाई कर लेनी चाहिए।
7. मिर्च के पके फलों को तोड़कर सिंचाई कर देनी चाहिए।
8. पशुओं से शीत लहर से बचाने के आवश्यक उपाय कर लें।
9. पशुओं को सकरे स्थान में बन्द करके एवं धुआं आदि से गर्मी पहुंचाने की कोशिश ना करें क्योंकि निमोनीया होने की सम्भावना हो सकता है।
10. दुधारू पशुओं को गुड़ खिलाने से शरीर का तापक्रम सामान्य बनाये रखने में सहायता मिलती है।
11. पशुओं को चाहिए कि अगर मुंहपका–खरपका, गलाघोटुं, पी.पी.आर., लंगड़ा बुखार आदि रोगों से बचाव के टिके नहीं लगवाएं हैं तो अब भी लगवा लें।

फरवरी माह के प्रमुख कृषि कार्य :

1. गरमा धान की नर्सरी के लिए खेत की तैयारी प्रारंभ कर देनी चाहिए। बोरो धान की रोपाई कर देनी चाहिए। गरमा सब्जी एवं चारा फसल की बुआई करना प्रारंभ कर देनी चाहिए।
2. गरमा मुंग एच.यू.एम.–16, कलाई (टी 9) एवं बसंतकालीन मक्का की बुआई करना प्रारंभ कर देनी चाहिए। जूट की बुआई भी इसी माह के अन्तिम सप्ताह में कर देनी चाहिए।
3. गन्ने की खुंटी फसल में निकाइ, गुड़ाई कर नेत्रजन खाद की दुसरी किस्त 40 कि.ग्रा./हे0 देकर सिंचाई कर देनी चाहिए।
4. आलू के अगात एवं मध्य अगात प्रभेद की खुदाई कर लेनी चाहिए।
5. अगर प्याज रोप चुके हैं तो समय–समय पर निकाई एवं गुड़ाई एवं सिंचाई करते रहें तथा थ्रिप्स एवं फफूंद धब्बों के लिए ईमीडाक्लोपीड दवा की 0.25 मि.ली./लीटर पानी में तथा डायथेनएम 45 का 0.2 प्रतिशत घोल को मिलाकर छिड़काव कर देनी चाहिए।
6. नवजात बछड़े एवं बछड़ीयों को अंततः परजीवीनाशक दवा नियमीत देनी चाहिए।
7. दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचने के लिए दुध पुरा व मुटठी बांध कर निकालें।
8. गाय एवं भैंस के दो–तीन माह गाभिन होने पर पशु चिकित्सक से गर्भ का परिक्षण अवश्य करवाएं।
9. बरसीम, रिजका एवं जई से सुखा चारा या अचार के रूप में एकत्र कर चारे की कमी के लिए सुरक्षित रखें।
10. पशुओं को दिन में धूप में रखें तथा रात में भी गर्म जगह पर रखने की व्यवस्था करें बचाव हेतु हीट बल्ब एवं हीटर का उपयोग करें।

मार्च माह के प्रमुख कृषि कार्य :

1. बसंतकालीन ईख की रोपाई समाप्त कर लेनी चाहिए तथा भारदकालीन ईख में निकाई, गुड़ाई एवं सिंचाई करते रहना चाहिए।
2. अन्य बसंतकालीन फसलों जैसे–मक्का, सूर्यमुखी, तिल एवं मुंगफली की प्रथम सप्ताह तक बुआई समाप्त कर लेनी चाहिए।
3. गरमा फसल की बुआई के समय पर्याप्त नमी हेतु रबी फसलों को काटने के 10–15 दिन पहले खड़ी फसल में हीं एक हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।
4. पिछले माह बोई गई फसलों में आवश्यक सस्य प्रबन्धन क्रियाएं करते रहनी चाहिए।
5. गरमा फसल के रूप में धान, मुंग, उड़द, मक्का, सोनापाट एवं चारा (ज्वार,मक्का, बाजरा, लोबिया, नेपियर घास, आदि) की बुआई/रोपाई इस माह के दूसरे पखवारे में शुरू कर देनी चाहिए एवं जबकि गरमा सब्जियों की बुवाई खत्म कर लेनी चाहिए।
6. पिछात शरदकालीन मक्का में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं बसंतकालीन मक्का में नत्रजन का यूरिया से उपरिवेशन करना चाहिए।
7. गन्ने की बची फसल की कटाई एवं पेराई इस माह में समाप्त कर लेनी चाहिए।
8. वृक्षों की पौध तैयार करने हेतु पॉलीथीन की थैलियों में मिटटी भरकर तैयार करें तथा खैर को छोड़कर अन्य वृक्षों के बीजों की बुआई कर देनी चाहिए।
9. बरसीम, लूसर्न एवं जई की फसल में सिंचाई क्रमशः 15 दिन एवं 12–14 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए।
10. जनवरी में कृमि गर्भाधान (ए.आई.) किये गये पशुओं की मार्च माह में (50 दिन पूरे होने पर) गर्भावस्था की जाँच करा लेनी चाहिए।

पानी बरसे बहन न पावे।
तब खेती को मजा दिखावे।।
जब पानी बरसे और वह खेत से बहने नहीं पावे तब खेती का मजा दिखलाई दे।

तीन पानी तेरह कोड़।
तब देखो ऊख की पोर।।
तीन बार ऊख की सिंचाई करे और तेरह बार कोड़े तब ऊख की पैदावार अच्छी होगी।





केन्द्र की प्रमुख गतिविधियाँ (अक्टूबर 2024 से दिसम्बर 2024)

विगत तीन महीने में केन्द्र द्वारा दिये गये प्रशिक्षण का विवरणः

प्रशिक्षण (अक्टूबर 2024 से दिसम्बर 2024)

प्रशिक्षण	अक्टूबर 2024				
	गृह विज्ञान	पशु चिकित्सा	शस्य विज्ञान	उद्यान	पौधा संरक्षण
1 से 3 दिन	04(107)	3(94)	6(193)	5(223)	3(94)
5 दिन	01(30)	1(44)	–	1(30)	–

प्रशिक्षण	नवम्बर 2024				
	गृह विज्ञान	पशु चिकित्सा	शस्य विज्ञान	उद्यान	पौधा संरक्षण
1 से 3 दिन	4(79)	7(281)	13(552)	11(412)	8(317)
5 दिन	–	1(44)	–	–	1(20)

प्रशिक्षण	दिसम्बर 2024				
	गृह विज्ञान	पशु चिकित्सा	शस्य विज्ञान	उद्यान	पौधा संरक्षण
1 से 3 दिन	2(48)	11(329)	11(360)	11(363)	9(288)
5 दिन	1(85)	1(81)	–	–	–

समूह अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षणः
फसल : सरसो (प्रभेदः पंत श्वेता)
क्षेत्रफल : 550 हेक्टेयर
किसान की संख्या : 1144

बिहार कौशल विकास योजना अंतर्गत आर.पी.एल. प्रशिक्षणः 01
विशय : मधुमक्खी पालक
दिनांक : 16.10.2024 से 27.10.2024

अनुसूचित जाति उपयोजना एवं नारी परियोजना अंतर्गत स्वास्थ्य एवं पोशण मेला का आयोजन दिनांक 11.12.2024 को ग्रामः रूपसपुर, हरनौत में किया गया।

लाभार्थीः 165
कृशि ज्ञान वाहन, का दिनांक 06.12.2024 एवं 07.12.2024 को नालन्दा जिले के ग्राम–शेरपुर एवं गोखुलपुर में भ्रमण किया गया एवं पशुपालक गोश्ठी का आयोजन किया गया।

लाभार्थीः 120
NICRA परियोजनाः
पशु स्वास्थ्य शिविरः 03 (30.09.2024, 01.10.2024, 05.10.2024)

लाभार्थीः 96
पशु टीकाकरण शिविर (HS & BQ) : 02 (27.12.2024 से 28.12.2024, 30.12.2024)

लाभार्थीः 90
NICRA परियोजना, अनुसूचित जाति उपयोजना अंतर्गत पॉल्ट्री (ब्रीडः बनराजा) का प्रत्यक्ष ग्राम ताजनीपुर, प्रखंड–बिंद में किया गया।

लाभार्थी : 20
प्रशिक्षणः 09 लाभार्थीः 455

शून्य जुताई तकनीक से रबी फसलों की खेती, जाड़े में पशुओं का रखरखाव, समेकित कीट ब्याधी प्रबंधन, सब्जियों की वैज्ञानिक खेती आदि विशयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

मशरूम के पौष्टिक और औषधीय महत्व

मशरूम गर्भवती महिलाओं, बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था तक सभी चरणों में अति उपयोगी पाया गया है। इसमें विद्यमान प्रोटीन, विटामिन, खनिज, वसा तथा कार्बोहाइड्रेड सरल उपलब्धता के कारण बाल्यावस्था से युवावस्था तक कुपोशण से बचाते हैं। शर्करा व कोलेस्ट्राल की कम मात्रा, सुपाच्य रेशों की बहुलता एवं पौष्टिक होने के कारण वृद्धावस्था के लिये एक आदर्श आहार है साथ ही पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में उपयोगी है।

बटन मशरूम के औषधीय महत्वः इसमें हृदय संबंधी रोगों के निदान हेतु रक्त के जमाव को रोकने के लिये लैक्टिन, कैंसर रोधी भरेटिन तथा जीवाणु रोधी टैनिन फिनोलिक एसिड व क्यूनॉन पाया जाता है। इसका सेवन पाचन तंत्र को दक्ष बनाता है, बीमारियों के प्रति रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाता है तथा रक्त में उपस्थित कोलेस्टॉल को कम करके हृदय रोगों को दूर करता है।

शिटाके मशरूम के औषधीय महत्वः विश्व मशरूम उत्पादन में शिटाके मशरूम का स्थान दूसरा है, इसको मशरूम का राजा भी कहा जाता है जिसका उपयोग भोजन एवं औशधि दोनों के रूप में किया जाता है। इसमें पाया जाने वाला इरीटाडेनिन नामक तत्व कोलेस्टॉल, ट्राइग्लिसरीन एवं फास्फोलिपिड की मात्रा और रक्तचाप को कम करता है। इसके कवक जाल एवं फलनकाय में कैंसर, फफूँद एवं विशाणु अवरोधी पालीसैकराइडस (के.एस.–2 एवं लेन्टीनिन) पाये जाते हैं जो कि रक्त परिवहन, रक्तस्राव, आँख, गला एवं मस्तिश्क संबंधी रोगों तथा शरीर में बनने वाली गिल्टियों को रोकने में महतवपूर्ण भूमिका हैं।

ढिंगरी मशरूम के औषधीय महत्वः इस मशरूम को खने से शरीर में ग्लूकोज सहन करने की क्षमता बढ़ती है जिससे मधुमेह रोगियों के उपचार में अत्यंत लाभकारी पाया गया है। घुलनशील कार्बोहाइड्रेड की बीटा–ग्लूकोन उपस्थिति के कारण इसमें कैंसर रोधी गुण पाये जाते हैं साथ ही उत्सर्जन तंत्र संबंधी रोगों एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में भी सहायक है। गैलिक एसीड, नारिन्जैनिन, एशेगोथियोन, टोकोफेरॉल आदि इसमें पाये जाने वाले वे मुख्य तत्व हैं।

धान के पुआल का मशरूम के औषधीय महत्वः हृदय रोगियों की आहर योजना में इस मशरूम को सम्मिलित करना उपयोगी पाया गया है। इसमें